IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फतेहगढ़ सेंट्रल जेल एक ऐतिहासिक अध्ययन

प्रिया यादव[1]ए प्रोफ़ेसर प्रीति त्रिवेदी[2]

[1]शोध छात्राए इतिहास विभाग आचार्य नरेंद्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालयए कानपुरए

[2]प्रोफ़ेसरए इतिहास विभाग आचार्य नरेंद्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालयए कानपुर

प्रस्तावना

उपयुक्त शीर्षक का अध्ययन 1857 से 1947 के मध्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान फतेहगढ़ सेंट्रल जेल में घटित घटनाओं तथा इसके इतिहास का आधुनिक संदर्भ में मूल्यांकन का प्रयास करता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में फतेहगढ़ सेंट्रल जेल एक महत्वपूर्ण पड़ाव रही है। अनेक देशभक्तों को इसी जेल में फांसी पर लटकाया गया था। अतः यह कहा जा सकता है कि केंद्रीय कारागार फतेहगढ़ स्वतंत्रता का तीर्थ स्थल है। विदेशी परतंत्रता से भारत को मुक्त करने में राष्ट्रीय स्तर के साथ.साथ जनपद स्तर पर फर्रुखाबाद का प्रमुख योगदान रहा हैए किंतु उसकी तुलना में यह जनपद क्रांतिकारी गतिविधियों के रूप में लोकश्रुत नहीं हो सका। यह स्थिति गुणात्मकए संख्यात्मकए घटनाक्रमों के महत्वए विषय वस्तुए सभी दृष्टिकोण से है। यह स्थान जनपदेत्तर और प्रदेशइतर क्रांतिकारियों की शरण स्थलीए प्रशिक्षण स्थलए और कर्मभूमि कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बहुत से फर्रुखाबाद के ऐसे घटनाक्रम रहे हैं जिनसे देश और प्रदेश अनभिज्ञ है। स्रोतों के अभाव में कलमकारों ने भी इन पर बहुत कम लेखनी चलाई है। यह शोध फर्रुखाबाद में स्वतंत्रता आंदोलन के योगदान के तहत सेंट्रल जेल फतेहगढ़ के आधुनिक अध्ययन का एक प्रयास हैए जो भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के पुनर्निर्माण का एक मार्ग प्रशस्त करता है।

मुख्य शब्द रू केंद्रीय कारागारए फतेहगढ़ सेंट्रल जेलए ऐतिहासिक अध्ययनए क्रांतिकारी गतिविधियां।

परिचय (introduction)

फतेहगढ़ सेंट्रल जेल जो ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण तथा इसके गर्त में अनेक दुर्लभ घटनाएं और दस्तावेज छुपे हैं। कारागार में उपस्थित अभिलेखों के अनुसार 37ण्79 हेक्टेयर ;लगभग 500 बीघाद्ध भूमि पर निर्मित कारागार के भीतर अनेक रहस्यमयी घटनाओं के कथा क्रम समाहित है। यह 164 गज चार दिवारी के भीतर निर्मित है। इसका निर्माण 1857 से 1867 के बीच 10 वर्षों के भीतर किया गया जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम संघर्ष का समय था। कारागार के भीतर बने विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों के स्मारक बीते दिनों की याद दिलाते हैं। उस दौरान जेल में बंदियों की संख्या अधिक थीए जिसके कारण उन्हें रखना और व्यवस्था करना काफी मुश्किल हो रहा था। 1857 और उसके बाद तक यह जेल मसेनी रोड और कादरी दरवाजा के मध्य स्थित लखूला गांव में थी। उसे समय के इस जेल के अवशेष आज भी उपलब्ध है। आश्चर्य हैए कि क्रांतिकारी नेताओं शहीद भगत सिंहए सुभाष चंद्र बोसए चंद्रशेखर आजादए सचिंद्रनाथ सानयालए शिव वर्माए डॉक्टर गया प्रसाद कटियारए रमेश चंद्रगुप्तए मनमथ नाथ गुप्तए महावीर सिंह इत्यादि की इस कर्मभूमि कहा जा सकता है। यहां पर बम तथा शास्त्र निर्माण हथियारों का परीक्षण बम

विस्फोट सदृश साहसिक कार्य भी होते थे। गंगा तट की विश्रांतए स्वराज कुटीरए आजाद भवनए केंद्रीय व जिला कारागारए टाउन हॉलए जिला स्कूलए मिलिट्री का किलाए मस्जिद सहित इबादतगाहों को पूजनीय पवित्र तीर्थ स्थल कहा जा सकता है। फर्रुखाबाद में ऐसे स्थलों की बहुलता हैए लेकिन बहुत कम स्थान के बारे में लोग अवगत हैं। अतिरिक्त संक्षेप में निम्न अनुसार क्रमबद्ध करके उनका विवरण दिया जा रहा है ताकि ध्वंसए विलुप्त और विस्मृति हो रहे ऐसी स्थलों को आगे लोग स्मरण रख सके।

फर्रुखाबाद में क्रांतिकारी गतिविधियांए महत्वपूर्ण स्थल और गुप्त अड्डे

अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई के युद्ध की अनवरत श्रृंखला में भारतीय क्रांतिकारी वीरता और उत्साह आत्मविश्वास से लड़े लेकिन 1857 संग्राम में भारतीयों को ही पराजय और अत्याचार झेलना पड़ा। लगभग यही स्थिति उसे दौरान फर्रुखाबाद में भी रही क्रांतिकारी जीतते रहेए हारते रहेए मारते रहेए मरते रहेए लूटते रहे क्रांतिकारियों का आंदोलन कभी लगातार और कभी रुक रुक कर चला रहा। भारत के अन्य प्रदेशों के क्रांतिकारी नेताओं का गुप्त रूप से लगातार फर्रुखाबाद में आगमन होता रहा। उन्होंने गुप्त रणनीति बनाई गुप्त योजनाएं बनाकर तदअनुसार आंदोलन का नेतृत्व भी किया। इनमें प्रमुख थे दादा योगेश चटर्जीए रामनयन उपाध्यायए सरदार भगत सिंहए शिव वर्माए जयदेव कपूरए महावीर सिंहए चंद्रशेखर आजादए विजय कुमार सिंहए डॉक्टर गया प्रसाद कटियारए झारखंड रायए रामप्रसाद बिस्मिल और उनकी बहन श्रीमती शास्त्री देवीए मराठा राजकुमारी बैजा बाईए सचिंद्रनाथ सानयाल सत्यनारायण सिंहए जगदीश त्रिपाठी आदि। इन क्रांतिकारियों के ठहरने के लिए कोई स्थाई अड्डा नहीं रहाए आवश्यकता अनुसार अड्डे बदलते भी रहते थे। उसके बावजूद निम्नलिखित तीन अड्डे प्रमुख थे .

1ण् रामबाग ;बढ़पुरद्ध
2ण् तलैया फ़ज़ल इमाम ;शहर फर्रुखाबादद्ध
3ण् गंगा के किनारे का गढ़ तथा विश्रांत ;लक्ष्मणगढ़द्ध।

कामरेड शिव वर्मा जो भारत के एक महान क्रांतिकारी थेए तथा कई पानी की सेल्यूलर जेल और फतेहगढ़ केंद्रीय कारागार में कैदी रहेए उनके द्वारा अपनी पुस्तक में लिखा गया कि ष्सेंट्रल जेल फतेहगढ़ के निर्माण में शहीदों का रक्त शामिल है। इस जेल के चारों तरफ कांटेदार तार होते थेए सोते समय ताला लगा दिया जाता था। यहां पानी की कमी है और किसी अंग्रेज ने इस जेल को कैंप कहाए वही किसी दूसरे अंग्रेज द्वारा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा गया कि यह कैंप नहीं डंप के समान है।ष कॉमेडी शो वर्मा एक से अधिक बार इस जेल में कैद रहे थेए स्वतंत्रता के बाद भी वह इस जेल में 1950 तक कैद रहेए जो अब महिला की फतेहगढ़ के रूप में जाने जाती है।

सेंट्रल जेल के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही बाई तरफ वरिष्ठ अधीक्षक का कक्ष हैए मुख्य द्वार के दाएं तरफ जेलर का कक्ष है । दूसरे द्वारा के तुरंत बाद लोहे का एक मजबूत तीसरा द्वारा है और इस द्वार से निकलने के तुरंत बाद आप कारागार के विशाल परिषद के खुले वातावरण से परिचित हो सकते हैं। दाएं और बाएं तरफ दो बस्तर पत्रिकाएं उत्कीर्ण हैए जिनमें से बाएं पत्रिका में सत्यमेव जयते और दाएं पट्टिका में बंदी के हितकारी के रूप में आदर्श वाक्य उद्धत है।

शोध के उद्देश्य

- पुनः लेखन के दौरान तथ्यों का क्रमिक रूप से अध्ययन करना तथा जिन विषयों पर अभी तक कार्य नहीं हुआ हैए उन्हें शामिल कर लेखन कार्य को पूर्णता प्रदान करने का प्रयास।
- फर्रुखाबाद जनपद में क्षेत्रीय स्तर पर स्वतंत्रता के लिए किए गए विद्रोह के कारणों व स्वरूप का पता लगाना तथा किसी विद्रोह के सफल अथवा सफल होने के क्या कारण थे का पता लगाना।
- जनपद में शहरी व ग्रामीण स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलन की प्रकृति को उजागर करना।

- फर्रुखाबाद में स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों के दौरान समाज के विभिन्न वर्गों जैसे किसानए दलितए महिलाएं इत्यादि के योगदान को वर्णित करना।
- फर्रुखाबाद के गुमनाम नायकों का पता लगाना जरूरी स्वतंत्रता आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई।

साहित्य समीक्षा (Literature review)

आधुनिक भारतीय इतिहास को जानने के क्रम में स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओंए नेतृत्वए परिस्थितियोंए परिणामए इतिहास विषय पर अनेक शोध कार्य हुए तथा भारतीय व विदेशी इतिहासकारों द्वारा अनेक पुस्तक लिखी गई **फर्रुखाबाद जनपद का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान** विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित शोध कार्य हुए.

- राजपूत रामकृष्णए डॉ रामकृष्ण राजपूत की पुस्तक **कीर्ति कथा मुक्ति संग्राम की** इस पुस्तक में डॉक्टर रामकृष्ण राजपूतए जो फर्रुखाबाद के इतिहासकार है ने फतेहगढ़ सेंट्रल जेल के इतिहास का वर्णन किया है जिसमें विभिन्न तथ्य शामिल है।
- त्रिपाठी वीण पीण केंद्रीय कारागार फतेहगढ़ के वरिष्ठ अधीक्षक बीपी त्रिपाठी द्वारा लिखित लेख **राष्ट्र की धरोहर केंद्रीय कारागार फतेहगढ़** में विभिन्न शहीदों जैसे मणिन नाथ बनर्जी तथा काले पानी की सजा पाने वाली फर्रुखाबाद के शहीदों का वर्णन किया गया है।
- वर्मा एसण कामरेड शिव वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक संस्कृतियों में विभिन्न शहीदों सहित फतेहगढ़ केंद्रीय कारागार की स्थिति का विवरण मिलता है।
- राय कालेए डिप्टी कलेक्टर काली राय द्वारा लिखित पुस्तक **फतेहगढ़नामा** में भी फतेहगढ़ कारागार से संबंधित विवरण प्राप्त होते हैं।
- छमंअमए म्न्त्ए । ढ्रंमजजमत तितनींइंक जिला गजेटियर भी महत्वपूर्ण स्रोत है।
- राजपूत रामकृष्णए फर्रुखाबाद के इतिहास का डॉक्टर रामकृष्ण राजपूत द्वारा लिखित पुस्तक **1857 के महानायक शहीद टीका सिंह** से भी महत्वपूर्ण विवरण प्राप्त होते हैं।
- वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान की शोधार्थी रही गर्भ नूतन ने सन 1857 के विद्रोह में फर्रुखाबाद की जनता का योगदान पर प्रभाव विषय पर शोध कार्य किया। इनका शोध कार्य भी महत्वपूर्ण विवरण प्रदान करता है।

शोध पद्धति (research methodology)

इस शोध का उद्देश्य भारत के गौरव पूरे इतिहास को प्रकाश में लाना हैए तथा फर्रुखाबाद जनपद के विषय हिट क्रांतिकारी जिनका स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहाए का नाम उजागर करना है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया हैए यह शोध पद्धति दृष्टिकोणए विचारए अनुभव तथा सामाजिक प्रक्रियाओं के विश्लेषण पर आधारित होती है। इस शब्द में प्राथमिक कर देती है दोनों प्रकार के स्रोतों का प्रयोग किया जाएगा जिसमें जिला गैजेट और इतिहासकार राम कृष्णा राजपूत की गाथा मुक्ति संग्राम कीए कारागार के अभिलेख इत्यादि शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्रए पत्रिकाएंए समाचार पत्रए शहीदों के पारिवारिक जनों के साक्षात्कारए संबंधित विषय पर शोध का अध्ययन इसका आधार होगा। उपलब्ध स्रोतों का व्याख्यात्मक व तुलनात्मक तरीके से विश्लेषण होगाए जिससे जाना जा सकेए कि फर्रुखाबाद के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर महत्वपूर्ण इतिहासकारों ने लेखन कार्य क्यों नहीं कियाघ्

यह छोड़कर अधिकतम गुणात्मक डाटा पर आधारित होगाए जिसकी सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों की विवेचना होगी तथा शोध निष्कर्ष का सार्थक योगदान सुनिश्चित हो सकेगा।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारियों का तीर्थ सेंट्रल जेल फतेहगढ़

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में फतेहगढ़ केंद्रीय कारागार का महत्वपूर्ण योगदान रहा अनेक देशभक्तों को इस जेल में फांसी पर लटकाया गया इस तरह यह जय स्वतंत्रता का तीर्थ स्थल कहा जा सकता है। 1922 में घटित गोरखपुर जनपद के चौरी चौरा हत्याकांड में 9 जनवरी 1923 को न्यायालय द्वारा 19 लोगों को उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में फांसी दी गई थीए जिनमें नजर अली को 1923 में फतेहगढ़ के केंद्रीय कारागार में फांसी दी गई। गांधी युग के दौरान 1921 से 1942 तक इस जेल में बंदी बनने का सिलसिला जारी रहा। हजारों देशभक्तों ने यहां अपने जीवन का एक हिस्सा देश की आजादी के लिए व्यतीत किया। इस केंद्रीय कारागार में फर्रुखाबाद के अतिरिक्त अनेक जनपदों के स्वतन्त्रता सेनानी के लिए यहां बंदीगृह था।

भारतीय स्वतंत्रता के 70 वर्ष बीत चुके हैं परंतु फतेहगढ़ की धूमिल प्राचीर और यहां की बैरक उन दिनों की याद दिलाती हैए जब राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए जूझते हुए लोगों ने बलिदान दिया तथा देशभक्ति की पीढ़ी ने अपने जीवन के अनेक बसंत यहां गुजारे थे। लेखक और स्वतंत्रता सेनानी श्री पिनारा जी ने फतेहगढ़ कारागार में स्वतंत्रता सेनानी देशभक्ति के जीवन की झांकी प्रस्तुत की है। आगरा की क्रांतिकारी बच्चा बाबू जिनके पैर काम नहीं करते थेए वह डंडों के सहारे चलते थेए लेकिन उनका हारमोनियम और तबला कभी बंद नहीं होता था। राजकुमार सिंह जो कानपुर की क्रांतिकारी थेए तारा बजाकर जेल के जीवन को सरस बना देते थे। जेल के भीतर संगीतमय वातावरण घर से दूर देश भक्तों व राजबंदियों को चिंताओं से मुक्त कर देता था। जेल के भीतर हंसी मजाक तथा वाद विवाद होता रहता था। शुरुआती दिनों में दलीय कट्टरता दिखती हैए परंतु धीरे.धीरे यह काम होती चली गई। जेल के अधिकारी स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति उदासीन होते थे और वे किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने से परहेज करते थे। विख्यात क्रांतिकारी यशपाल और मन्मथ नाथ गुप्त को भी यहां भेजा गया था।

जिला जेल के बंदी और गतिविधियां

1857 में नवाब तफज्जुल हुसैन खान की हुकूमत के समय ;पश्चिमी भाग का शासन अहमद यार खान और पूर्वी फर्रुखाबाद का शासन यासीन अली खान नाजिमद्धए फर्रुखाबाद में ईस्ट इंडिया कंपनी के 11 थाने थेए उस समय नवाब की आज्ञा का उल्लंघन करने वालों को जिला जेल में रखा जाता था। इसके बाद यही नियम अंग्रेजी शासन काल में भी परंपरागत रूप से आगे चलते रहे। बात के समय में 1857 में लखुला के स्थान पर फतेहगढ़ कारागार के निर्माण का निर्णय लिया गया। 4 जून 1802 को फतेहगढ़ कारागार में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभुत्व स्थापित हो गयाए जिसके बाद जिला न्यायाधीश की नियुक्ति की। आजमगढ़ की क्रांतिकारी नेता झारखंडी राय सांसद जिला जेल के बंदी रहे।

शामली की रामनयन उपाध्याय को स्वतंत्रता पूर्व सन 1942 में फतेहगढ़ कोर्ट से जीप के पीछे बांधकर जिला जेल तक ले जाया गया जिससे उनकी पीठए पैर और हाथ घायल हो गए।

श्रीमती पार्वती देवी द्वारा राजद्रोहात्मक भाषण देने के कारण वह जिला जेल फतेहगढ़ में बंदी रही। उनके बारे में लिखित शोध प्राप्त होता है कि वह 2 वर्ष से कड़ी कैद की सजा भुगत रही थी।

कामरेड शिव वर्माए जो कानपुर के क्रांतिकारी थीए वह भी फतेहगढ़ जिला जेल में बंदी रहेए बाद में वह काला पानी की पोर्ट ब्लेयर जेल में बंदी रहे।

बेवर जनपद मैनपुरी के निवासी और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख नेता रहे जगदीश नारायण त्रिपाठीए जो स्वतंत्रता के पूर्व रिवॉल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के सदस्य थेए तथा बाद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से भोगों से विधायक बनेए वह कई बार जिला जेल में बंदी रहे।

आजमगढ़ के क्रांतिकारी नेता झारखंडी राय सांसद जिला जेल में बंदी रहे थे।

फर्रुखाबाद के प्रमुख बंदियों में कालीचरण टंडनए होरी लाल यादवए रामकृष्ण सारस्वतए सियाराम गंगवारए इकबाल बहादुर वर्माए सूर्य कुमारी वर्माए वीर मानसए रामनारायण आजादए योगेंद्र शुक्लाए श्रीमती गंगा देवीए रघुनंदन सिंहए विद्रोही डॉक्टर कैसर खानए

वंश गोपाल चतुर्वेदीए चिरंजीलाल पालीवालए जीएल कनौजियाए अनंत राम श्रीवास्तवए रमाशंकर शुक्लए रामसेवक मिश्राए स्वामी रामानंदए नित्यानंद शर्माए श्रीमती विद्यावती राठौरए लालमणि गुप्ता आदि शामिल थे। 1940 में हुए सत्याग्रह आंदोलन में 1400 से अधिक सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया गयाए बाद में ने 4 दिसंबर 1941 को रिहा कर दिया गया।

कुओं का इतिहास

फतेहगढ़ सेंट्रल जेल के चारों दिशाओं में 15 से 20 फीट वाले चार कुंआ हैंए जिनकी गहराई काफी अधिक है। तत्कालीन समय में इनकी उपयोगिता बहुत थीए परंतु आज उनका महत्व कम हो गया है और यह केवल दर्शनीय स्थल रह गए हैं। वरिष्ठ जिला अधीक्षक के आवास के दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर एक अति व्रहदाकार हुआ हैए जो ऊपर से पटा हुआ है। यहां देखने में किसी पुराने ध्वंस अवशेष अथवा स्मारक की तरह दिखाई पड़ता है। यहां दो नई बैरक का निर्माण किया गया हैए तथा चार पुरानी बैरक गिरकर नष्ट हो गई। पानी के लिए यहां नालों की व्यवस्था हैए जो पूर्व दिशा की ओर भाकर बड़े नाले के रूप में जेल की चार दीवार से बाहर निकलते हैं। इनकी चौड़ाई 3 मीटर है तथा निकास स्थान पर चौड़ाई 5 मीटर तक हो जाती है।

संग्रहालय के रूप में जेल को विकसित किया जाना

जिलों को संग्रहालय के रूप में विकसित करने की दिशा में सर्वप्रथम इलाहाबाद वर्तमान प्रयागराज की नैनी जेल कोए जवाहरलाल नेहरू जी के नाम से संग्रहालय के रूप में विकसित किया गया था। इसके अलावा गोरखपुर अल्मोड़ा गोंडा फैजाबाद इतिहास जिलों को भी प्रथम प्रधानमंत्री और स्वतंत्रता सेनानी रहे जवाहरलाल नेहरू की स्मृति में विकसित किया जा रहा है। फतेहगढ़ की सेंट्रल जेल भी इन जेल में से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

1894 के कारागार अधिनियम के अनुसार एक पुलिस अधीक्षकए एक चिकित्सा अधिकारीए एक सहायक चिकित्सा अधिकारीए जेलर और अन्य अधिकारी शामिल होंगे। इसी अधिनियम के अंतर्गत जेल की स्थापना की जाती हैए जिसके द्वारा सेंट्रल जेलए जिसमें अधीक्षकए उप अधीक्षकए जेलरए उपकार पालए महिला वार्डए सहायक चिकित्सा अधिकारीए कंपाउंडर इत्यादि का होना प्रस्तावित है।

फर्रुखाबाद और यहां की जेलों की क्रांतिकारी दास्तान

1914 में फर्रुखाबाद में क्रांतिकारियों का पहला संगठन बना था इसका संचालन स्वामी यज्ञानंद द्वारा किया गया। उनके द्वारा भारत माता को परितंत्रता से मुक्त करने के लिए शपथ दिलवाई गई। मैनपुरी के गेंदालाल दीक्षित ने इन लोगों को गोरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण प्रदान किया। गेंदालाल दीक्षित ने उन्नाव में स्वामी गौतम के नाम से काम किया।

1921 में कायमगंज तहसील के निवासी बाबा चंद्रसेनए नवाबगंज के पंडित पप्पू लाल और पंडित नाथूराम सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान जेल में भेजे गए। बाबा चंद्रसेन सन 1921 से 1942 तक संन्यास लेने के बाद भी जेल जाने से पीछे नहीं हटे। इसी तरह सदर के नरेंद्र नाथ राठौर सन 1921 के आंदोलन में बंदी बनाए गए। अकबरपुर छिबरामऊ के निवासी लक्ष्मी नारायण दुबे गुरसहायगंज के निवासी जयदेव शास्त्री और सेठ श्री गोपाल ने भी आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। फर्रुखाबाद की क्रांतिकारी को फरवरी 1922 के दौरान गिरफ्तार किया गया तथा इन्हें सख्त सजा दी गईए इन सभी को फतेहगढ़ की जेल में रखा गया। महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान गंगा देवी जो कन्नौज निवासी थे सहित 11 लोगों को फतेहगढ़ की जेल में बंद किया गया। वही 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समय फर्रुखाबाद की लीलावतीए प्रफुल्ल मोहिनीए गंगा देवीए श्रीमती राम जीए जनक लली शुक्लाए सूर्य कुमारी वर्माए तथा ज्ञान देवी को गिरफ्तार कर जेल में बंदी बनाया गया। अगस्त 1942 में गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद भर के विद्रोह के दौरान क्रांतिकारी योगेश चटर्जी ने फर्रुखाबाद में गंगा तट पर स्थित विश्रांत घाट और घटिया घाट में कैंप लगाकर शास्त्रों का निर्माण शुरू किया। इन्होंने युवा क्रांतिकारियों को बम बनाने और रेल पुत्री को उड़ाने का प्रशिक्षण दिया।

उत्तर प्रदेश के केंद्रीय कारागार

- फतेहगढ़ ;जिला फर्रुखाबादद्ध
- नैनी ; इलाहाबादद्ध
- आगरा
- बरेली
- वाराणसी
- लखनऊ

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भारतीय जनमानस के लिए एक महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण विषय रहा है। परंतु आज भी स्थानीय स्तर पर अनेक क्रांतिकारियों के नाम गुमनाम हैए जिनके योगदान को जानना अति महत्वपूर्ण और युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक साबित होगा। इसी क्रम में जनपद फर्रुखाबाद के क्रांतिकारी तथा यहां स्थित केंद्रीय जिला जेल फतेहगढ़ के इतिहासए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इसकी भूमिकाए के बारे में इस शोध के दौरान नए तथ्य उजागर होंगे। यह शोध भारतीय इतिहास में छोटे से योगदान के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)

1ण उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागारए लखनऊ दृ फतेहगढ़ जेल से संबंधित ब्रिटिश कालीन रिपोर्ट्सए शासनादेश एवं निरीक्षण अभिलेख।

2ण थ्ंततनाीइंक क्पेजतपबज ळंमजजममत ;उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशितद्ध।

3ण फतेहगढ़ सेंट्रल जेल के प्रशासनिक अभिलेख दृ जेल नियमावलीए कैदियों के आंकड़ेए प्रशासनिक रिपोर्ट्स।

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

4ण शर्माए बीण एनण ;2010द्धण भारतीय कारागार व्यवस्था का इतिहासण इलाहाबादरू किताब महल।

5ण ै नतमीए त्ण ;2000द्धण च्तपेवद त्मवितउे पद प्दकपंण छमू क्मसीपरू ।च्भ् च्नइसपेीपदहण

6ण त्ंहींअंदए टण ;1998द्धण जीम ब्वसवदपंस च्तपेवद ैलेजमउ पद प्दकपंण भ्लकमतंइंकरू व्तपमदज स्वदहउंदण

7ण श्रवीपए च्ण ब्ण ;1985द्धण त्मचतमेपवद ंदक त्मेपेजंदबम पद ब्वसवदपंस प्दकपंण छमू क्मसीपरू च्मवचसमष्े च्नइसपेीपदह भ्वनेमण

8ण राजपूत रामकृष्ण कीर्ति गाथा मुक्ति संग्राम कीए भदौरिया कंप्यूटर्सए गली वृंदावनए चौक फर्रुखाबाद।

9ण राजपूत रामकृष्ण ;25ध्02ध्2005द्ध फर्रुखाबाद इतिहास के दर्पण मेंए वरिष्ठ अधीक्षक केन्द्रीय कारागार फतेहगढ़।

10णशुक्ला प्रो चिंतामणि फर्रुखाबाद जनपद का इतिहास

11णसिंह अयोध्या राष्ट्रीय आंदोलन का संक्षिप्त इतिहास

12ण्अधिकार प्रेस लखनऊ मुक्ति संघर्ष क्रांति विशेषांक

सहायक स्रोत (Supplementary Sources)

13ण्फर्रुखाबाद का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान ;स्थानीय ऐतिहासिक अभिलेखद्ध।

14ण्नेहरूए जवाहरलालण् (1946). मेरी कहानी एवं भारत की खोजण् नई दिल्लीरू नेशनल बुक ट्रस्ट।

15ण्बिस्मिलए राम प्रसादण् (1929). कैदी की आत्मकथाण् काशीरू स्वराज प्रकाशन।

16ण्चंद्रए विपिनण् (2016). आधुनिक भारत का इतिहासण् नई दिल्लीरू ओरिएंट ब्लैकस्वान।

ऑनलाइनधडिजिटल स्रोत (Online Sources)

17. National Archives of India. https://nationalarchives.nic.in

18. Shodhganga – INFLIBNET. https://shodhganga.inflibnet.ac.in

19. उत्तर प्रदेश डिजिटल जिला गजेटियर संग्रह। https://www.dli.ernet.in